Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/PT)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com

Topic ⇒ Descartes: Proofs for the Existence of God.

(देकार्त : ईश्वर की अस्तित्व की अवधारणा)

देकार्त अपने दर्शन की शुरुआत, निर्विवाद एवं निस्सन्देह सत्य की प्राप्ति हेतु संदेह प्रणाली से किया। इस प्रणाली से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे की स्पष्टता एवं विविक्तता ही सत्य ज्ञान की कसौटियाँ हैं। इस मापदण्ड के अनुसार देकार्त ने सबसे पहले आत्म तत्व की सत्ता को सन्देहातीत, स्वयंसिद्ध माना है। आत्म तत्व के समान, सत्तामूलक तर्क, निगमनात्मक तर्क, कार्य-कारण मूलक तर्क आदि के आधार पर ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित किया। आत्म तत्व के समान ईश्वर का भी हमें स्पष्ट अनुभव होता है। अतः ईश्वर की सत्ता को देकार्त ने प्रमाणित किया।

देकार्त ने ईश्वर को निरपेक्ष द्रव्य के रूप में स्वीकार किया है। उनके अनुसार द्रव्य के दो भेद हैं। (i) निरपेक्ष द्रव्य (ii) सापेक्ष द्रव्य। पुनः सापेक्ष द्रव्य के दो प्रकार है- चेतन आत्मा एवं अचेतन जड़ तत्व, दोनों एक दूसरे से स्वतंत्र हैं परन्तु अपनी सत्ता के लिए दोनों द्रव्य ईश्वर पर आश्रित हैं। इस प्रकार से देकार्त ने तीन द्रव्यों की सत्ता स्वीकार किया है जो क्रमशः ईश्वर, आत्मा और जड़ पदार्थ हैं।

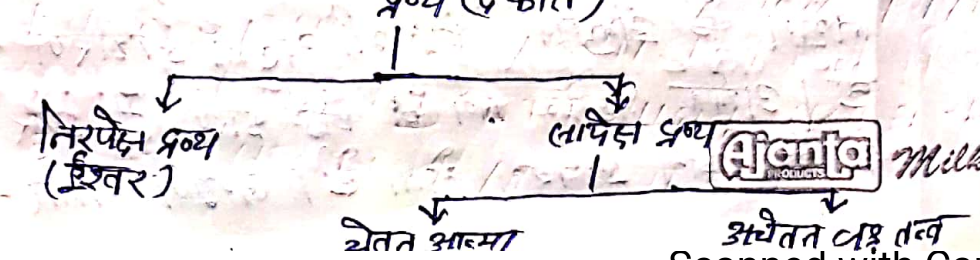

Ajanta Milky
Scanned with CamScanner

देकार्त के अनुसार ईश्वर एक मात्र निरपेक्ष द्रव्य है। वे अनंत, सर्वज्ञ, स्वतंत्र और सर्वशक्तिमान हैं, उन्हीं से विश्व की सभी वस्तुएँ उत्पन्न हुई हैं। ईश्वर सभी प्रकार के अपूर्णताओं से रहित है। देकार्त ईश्वर को सभी दुर्गुणों और दोषों से मुक्त माना है। देकार्त का ईश्वर मनुष्य को सच्चे मार्ग की ओर प्रेरित करता है। वह परम दयालु तथा सद्गुणों का भण्डार है। देकार्त ने ईश्वर की सत्ता सिद्ध करने के लिए चार प्रमाण दिये हैं जो निम्न हैं— (i) सत्तामूलक तर्क (ii) कार्य-कारणमूलक तर्क (iii) सृष्टिमूलक तर्क (iv) निगमणात्मक तर्क

(i) सत्तामूलक तर्क (Ontological Proof) :⇒ देकार्त का कहना है कि पूर्ण ईश्वर का ज्ञान उसके सत्ता का द्योतक है। जैसे किसी त्रिभुज के ज्ञान मात्र से ही यह सिद्ध है कि उसके तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर होता है, उसी प्रकार ईश्वर के ज्ञानमात्र से ही उसकी सत्ता सिद्ध है। ईश्वर के अस्तित्व के बिना उसके पूर्ण तथा अनन्त होने का ज्ञान असंभव है। इस तर्क के द्वारा देकार्त विचार और वस्तु में समन्वय स्थापित करना चाहते हैं। साधारणतः विचार और वस्तु में भेद हैं। यह जरूरी नहीं है कि सभी विचारों के अनुरूप वस्तु हो। परन्तु पूर्ण तथा अनन्त ईश्वर का विचार ईश्वर के बिना असंभव है। संसार के सभी पदार्थ अपूर्ण हैं, परन्तु अपूर्ण ईश्वर वदतोव्याघात है। इस प्रकार से ईश्वर को पूर्ण तथा अनन्त मानकर उसके अस्तित्व का अभाव मानना कठिन है।

(ii) कार्य कारणमूलक तर्क (Causal Proof) :→ कार्य कारण नियम के अनुसार कोई भी घटना अकारण नहीं होती है। अर्थात प्रत्येक कार्य का कोई कारण है और प्रत्येक कारण का कोई कार्य अवश्य होता है। सम्पूर्ण संसार एसी

कार्य कारण नियम से बँधा हुआ है। इस नियम का दूसरा पहलू यह है कि कार्य की सत्ता कारण से अधिक नहीं हो सकती है। इसका अर्थ यह है कि कार्य में किसी ऐसी शक्ति का आविर्भाव नहीं स्वीकार किया जा सकता जिसका कारण में सर्वथा अभाव हो। कार्य कारण नियम के दोनों लक्षणों का ईश्वर में समन्वय होता है। 'हमारी बुद्धि में ईश्वर है' ऐसा विचार जन्म से विद्यमान (Innate) है। यह विचार कार्य हुआ अतः इसका कारण अवश्य होना चाहिए नहीं तो अकारण घटना (Uncaused event) का दोष होगा, देकार्त का मानना है कि "ईश्वर है" ऐसे विचार का कारण ईश्वर ही हो सकता है, दूसरा कोई नहीं। पुनः ईश्वर को हम सर्वज्ञ, पूर्ण और अनन्त के रूप में जानते हैं। अल्पज्ञ, अपूर्ण और सान्त जीवन इसका कारण नहीं हो सकता है। अतः सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ईश्वर ही इसका कारण है, क्योंकि कारण की सत्ता कार्य से न्यून नहीं हो सकती है। अतः ईश्वर संबंधित सर्वज्ञता, परिपूर्णता, आदि विचारों का जनक स्वयं ईश्वर ही है, मानव नहीं। अतः ईश्वर की सत्ता प्रमाणित है।

(iii) ब्रह्मांडमूलक तर्क (Cosmological Proof) :- ईश्वर ही सृष्टि का कर्ता है। ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई सत्ता इसका कर्ता नहीं हो सकता है। मनुष्य सान्त है, वह अनन्त सृष्टि का कर्ता नहीं हो सकता है। यदि मानव स्वयं अपना कर्ता होता तो वह अपने को पूर्ण बनाता अपूर्ण नहीं, अतः मानव इसका कर्ता नहीं है। माता पिता भी व्यक्ति के उत्पत्ति का मूल कारण नहीं है। मानव तथा संपूर्ण सृष्टि को उत्पन्न करने वाला परमसत्ता परमेश्वर है। सृष्टि जड़ है, वह स्वयं अपना कारण नहीं हो सकती है। जड़ वस्तु केवल उपादान कारण हो सकती है। ईश्वर सृष्टि का निमित्त कारण है।

Scanned with CamScanner

(iv) निगमनात्मक तर्क (Deductive Proof) स्पष्ट और निस्सन्देह सत्य को ही देकार्त सत्य मानते हैं। इस मापदण्ड के आधार पर उन्होंने सबसे पहले आत्मा की सत्ता को प्रमाणित किये। सबसे पहले निस्सन्देह, स्पष्ट आत्मा की सदा: अनुभूति हुई। देकार्त का मानना है कि आत्म तत्व के समान ईश्वर तत्व का भी हमें स्पष्ट अनुभव होता है। अत: ईश्वर की सत्ता भी सिद्ध है। आत्म तत्व स्वत: सिद्ध साक्षात अनुभूति है, परन्तु ईश्वर की सिद्धि आत्मा के समान सुस्पष्ट होने पर निर्भर है। इसी कारण इस तर्क को निगमनात्मक तर्क माना जाता है।

देकार्त की ईश्वर की अवधारणा के उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि देकार्त ने ईश्वर को निरपेक्ष द्रव्य के रूप में स्वतंत्र सत्ता माना है। इसके लिए उन्होंने उपरोक्त चार प्रमाणों का भी आधार बनाया है। भारतीय दर्शन में भी ईश्वर सिद्धि का प्रयास किया गया है। उदयनाचार्य ईश्वर सिद्धि हेतु नौ हेतु बतलाये हैं। उनके अलावा न्याय, मीमांसा, वेदान्त आदि चारों प्रमाणों से ईश्वर की सत्ता सिद्ध मानते हैं। व्यवहारिक दृष्टिकोण से भी देखा जाय तो सृष्टि के लिए सृष्टि कर्ता का होना अनिवार्य है, अनादि और अनन्त संसार की व्याख्या हेतु ईश्वर का होना अनिवार्य है। लेकिन ईश्वर सिद्धि के लिए दिये गये सारा प्रमाण ईश्वर को प्रमेय (ज्ञेय) सिद्ध करते हैं जबकि वास्तविकता में ईश्वर अप्रमेय है।

Scanned with CamScanner